

आती

॥६२॥

केवले ॥४॥ इती श्री अस्तुती संपूर्णः ॥ अथ कुवे  
रसाहेवमाहारजानो ज्ञानभक्ती वैरागती एषु ॥  
प्रथं मगुरुवारं भवजे केवलपती ईश ॥ ज्ञानभक्ती  
वैरागपद ॥ भाषुहसंमलसरेस ॥ सेही पत्र उ  
दीतवृष जुगलभक्ती वैराग ॥ मध्यडी सुअंकुर  
वीत ॥ सोनी जज्ञानवीभाग ॥ २ ॥ संजमत्री ये एक  
तारस ॥ बहतवृक्ष अदसुत ॥ सहीतभक्ती वैराग  
तीमु ॥ ज्ञानसरल अनुसुत ॥ ३ ॥ वृक्षपत्रवस्तरव  
त ॥ तजेसजे अनुराग ॥ लोनी जज्ञानपुरससत  
मुक्षराभक्ती वैराग ॥ ४ ॥ पेहेल उदीतत्री ये मही  
जेही ॥ सोनी जकहु अनाद्य ॥ सुनहो संतमस  
सुध्यचीते ॥ धरी मंतमोद उलाद ॥ ५ ॥ पुरव आह  
बीजगथकी ॥ उदीतभक्ति अंकुर ॥ पृष्टी करं नपी  
छुतेलीये ॥ जुगल सोपत्रसकुर ॥ ६ ॥ तेसेही ज्ञान  
आगमथकी ॥ असुभतजे सुभराग ॥ राग अंग  
भक्तीपद ॥ त्याग सोही वैराग ॥ ७ ॥ ज्यौं बीजग अ  
कुरसे ॥ पगटेपत्रपराग ॥ लोनी जज्ञानसुमरुथ  
की ॥ उपजेभक्ती वैराग ॥ ८ ॥ तेहते ज्ञानसो आगुह  
त्यागभक्ती सोहपीछ ॥ सर्वेसोही संमरुही जी  
नुअनुभवगत्यपीछ ॥ ९ ॥ त्रीयेतससुभदस्येक ॥  
जीनेजेहके अधीकार ॥ उ संममध्यमकनेष्टके

एतीनुकेत्रीयेसार ॥१०॥ उत्पंसकुंलक्षज्ञानके म  
 ध्यमकुश्रवत्याग ॥ कती एकुकीया भक्तीहे नां  
 मरुपगुंनग्राज ॥११॥ वंसपत्रहृद्यगांठल्यौ ॥ डीर  
 गत्यगगंनतीहाल ॥ ल्यौनीजभक्तीवैरागपरुज्ञां  
 नसोउरधुवीसाय ॥१२॥ आरधमतीगत्यभक्ती  
 की ॥ सहीतवैरागसमेत ॥ दीरघगतीदीव्यज्ञां  
 नहे ॥ चीनहीसोबुंलवेत ॥१३॥ ज्ञानभक्तीवैराग  
 के ॥ जंग एकत्रीयेनांम ॥ ज्ञानसीरभक्तीभुज ॥  
 त्यागदाहंतजोरुवांम ॥१४॥ वरनुहुपुंज्यपतापपु  
 नी ॥ त्रियेलक्षकेदक्षसार ॥ ज्ञानभक्तीवैरागके  
 वीवीधीवीमलवीस्तार ॥१५॥ सुषकलक्षकुहु  
 भक्तीके ॥ सुनहोसंतधरीकोन ॥ बीचवरनंन  
 करुत्यागके ॥ पीछेकहेहसुध्यज्ञान ॥१६॥ भक्ती  
 अतीनसुभसलीलमलीनभव ॥ रजकभयेगु  
 रुदेव ॥ साबुवैरागसत्यासत ॥ पटकलीयेपटए  
 वा ॥१७॥ अथछंदभुंजंगी ॥१॥ बीनुतीजभक्तीसेसु  
 कीतपायं ॥ त्रवेधंतापंबुजंनंकदायं ॥१॥ बीनुत  
 सवुजंचीतं ॥ स्वांतीनायं ॥ बीनुचीतस्वांतंनची  
 नंरहायं ॥२॥ बीनुचीतनचीनंमलीनमंनमता  
 यं ॥ जौल्यौंमंनमलीनंनैतंमोक्षदायं ॥३॥ बीनु  
 मोक्षदायंअकांमंसकायं ॥ मंनंछाजनंमंब्रथायं

भक्ती

॥ ६३ ॥

वहायं ॥ ४ ॥ फां सुमात तातं संतापं सहायं ॥ भारं  
तं मारं तं गमारं धरायं ॥ ५ ॥ धी कं गंधी कं गंधे हं  
त्वं धरायं ॥ स्वची दा सो नं दे रु दं नं सरायं ॥ ६ ॥ सा  
षी ॥ एते ही कात अका जही ॥ होत भक्ती वी तु सो य  
ते हुते समरु सकल ग्रहो ॥ भक्ती अती न प्रव को  
य ॥ १ ॥ सुन ही संत सु त्रि सा व्य ही ॥ वी श्व व दी त ज  
स जे ह ॥ अनंत कोट भवत री गये ॥ अती न भक्ती  
करी ने ह ॥ २ ॥ सो र ग ॥ दु अ म्नी प प्रे हे ला द ॥ नार द  
अथ भभी श्य राजे ॥ रुष मां ग द अंग द ॥ अती न  
भक्ती हनु संत भजे ॥ ३ ॥ व्या ख मी क मु नी व्या स  
जा स उग्र बु धी नी गं म व दे ॥ सं सु ध रं न ध र से  
स ॥ अती न भक्ती धु ड च तुर रु दे ॥ ४ ॥ तु ल सी दा  
स जे दे व ॥ भे व सुर अती उ च से ॥ अती न भक्ती अ  
हं मे व ॥ भे व सी र स क ल ध रे ॥ ५ ॥ सं मा नं द नी मा  
नं द ॥ वी सु सां म मा ध्वा चार स धे ॥ पु ग ट क ली  
सां ही वं द ॥ अती न भक्ती ज स स क ल वी षे ॥ ६ ॥  
दी हा ॥ ए ही सब संत सी रो म नी ॥ सर ल र ता र स  
री त ॥ तं न सं त धं न्य ह री सर न पे भक्ती अती न  
पर ती त ॥ १ ॥ ओ र सं त अ ग नी त घ ने ॥ अती न ये  
म अ नु रा ग ॥ अती न भक्ती उ र स व न के ॥ स  
नु ज स ग वं त उ मा ग ॥ २ ॥ रा ग रे णी भक्ती अती

नदी नली नमंत सबके । उदी त प्रकाश भास  
 जौ ल्यो ते जरब के ॥ १ ॥ थावर जंगम जल थल जेत  
 अचर चराचर जीव जग जेत ॥ २ ॥ तीनु सर्व प्रे  
 मधी ल्य अनुराग ॥ जीन जेहं से एकता पद पा  
 गा ॥ ३ ॥ (सोही एकता ही चाही चीतनी ल्य स  
 र्वनां । वंशी त अंत जल भ्रष्ट ल्यो पवनां ॥ ४ ॥  
 एही परकार स्यार सर्व चीत्या । वी वीधी भात  
 मीन मीन रंग भीना ॥ ५ ॥ यो सर्व जीव एक ए  
 क प्रेमाधीन से ॥ सोहुनी ज प्रेम भक्ती ते हुती  
 नसे ॥ ६ ॥ तब तेहु से प्रव रुची त सवाहु ॥ अद्वैत द्वै  
 त जब भये हे अनाहु ॥ ७ ॥ प्रसीध सकल सुष जुग  
 ल समेता ॥ अद्वैत पदको हो कृणकीनु हेता ॥ ८ ॥  
 ग्रभमात संजुक्त प्रयेनां ही ॥ प्रसव द्वैत बालक  
 दुध पांही ॥ ९ ॥ ल्योनी ज जने बी दु द्वैत सनेहु ॥ गु  
 रु स्वचीदानंद हारदन देहु ॥ १० ॥ ज्योती धृष्टी  
 प्रस्वांती रत्यनेहु ॥ प्रती त प्रेम प्रगटयत मेहा ॥  
 ११ ॥ प्रेम अनंग सकल घट सोई ॥ जुगल रमण  
 बीनु प्रगटत हीई ॥ १२ ॥ काष्ट पां हांण मध्य अज्ञ  
 नीवासु ॥ द्वैत गहन बीनु नहीनां प्रकाशु ॥ १३ ॥  
 तीमनी जचे ही तंन सकल सहार्ई ॥ बीनु सत  
 गुरु संघ दर संन पाई ॥ १४ ॥ तप्त तेज हे ज अ

भक्ती ॥ तुसुततो ॥ १५ ॥ हेतुभाभवीनुव्यातहो ॥ १५ ॥  
 केवलपदतीमतेजनीजसो ॥ १६ ॥ कुरणानीर  
 ॥ १६ ॥ ॥ ॥ बीनुभक्तीनहो ॥ १६ ॥ लोकचतुरदशजस  
 वसरंगी ॥ १७ ॥ हेतुभाधीनपदप्रेमउमंगी ॥ १७ ॥  
 जुगलजुगलबीनुसकलप्रपंगा ॥ सुस्मशुल  
 तंनकीटपतंगा ॥ १८ ॥ जडबीनुचेहीतंनकरत  
 नांज्ञाना ॥ १९ ॥ बीनुचेतंनजडसुंन्यसमाना ॥ १९ ॥  
 हेतुबीनानहीहासविलास ॥ जुगलमीलेप  
 दपुंज्यप्रकासा ॥ २० ॥ प्रकृतीपुंशतंनमुलप्र  
 नादी ॥ २१ ॥ हेतुर्तभयेसकलसवादी ॥ २१ ॥ सो  
 हीनीजस्वादभक्तीरसभेदा ॥ कहतपोकार  
 चारुसतवेदा ॥ २२ ॥ नीगंमनीरूपस रूपस  
 राये ॥ ताईवीमलजससबजंनगाये ॥ २३ ॥  
 गावतजसजीनुमोक्षहीपावा ॥ तातेसक  
 लसर्वकरतहीचाहावा ॥ २४ ॥ व्याकरणभा  
 सप्रभ्यासप्रदंतु ॥ कथतवांतीसर्वशांत्स  
 हीतंतु ॥ २५ ॥ सास्तरषटषटमठपटसोधे ॥ बी  
 धीनषेदभेदभवबोधे ॥ २६ ॥ सर्वमीलीसार  
 सीधांतनीकारे ॥ भक्तीप्रनीनपदप्रगत्यो  
 कारे ॥ २७ ॥ पुराणप्रष्टादशजसजेहीभेदा  
 वदीतसतभक्तीप्रनषेदा ॥ २८ ॥ बीप्रसक

लसुनी जंत रुसी राचे ॥ नकी अननी नदी न हो  
 इषुजाचे ॥ २९ ॥ संत अनंत कोट उर प्रासे ॥ ३० ॥  
 मभक्ती रस प्रगट प्रकासे ॥ ३१ ॥ चौं देई लोक मे  
 ससी हुवरने ॥ भक्ती सुभग पद सद करी नने  
 ३२ ॥ सुन हो संत मम सुघड सचेता ॥ अननी न  
 दास हरी जंत ही समेता ॥ ३३ ॥ एही वीधी सो ज  
 षो जहं म कर ही ॥ बी नुह भक्ती को हुन ही नी  
 स्तर ही ॥ ३४ ॥ ताते सकल जंत ग्रहो मम चरनां  
 होई रहो दी न ली न प्र सरण सरने ॥ ३५ ॥ कर  
 हुसकल हं मज बी भव पारा ॥ हे उपव वाई नी ज  
 धां म हं मारा ॥ ३६ ॥ जे नी ज धां म पर म सुष पा वो  
 नो संकट वट वो हो र न प्रा वो ॥ ३७ ॥ ते हु ते अननी  
 ननी ज भक्ती आराधो ॥ गुरु सुष वचन सचेन  
 करी साधो ॥ ३८ ॥ संसे सकल तती तं न मं न प्र  
 पो ॥ सी सस ही त म म चरं न समर पो ॥ ३९ ॥ र  
 हो हु न ची न फेरी की न से न डर हो ॥ होई प्र ल म  
 स्त अस्त उदये लु फर हो ॥ ४० ॥ रु दये कम ल म  
 ल रहित वी चर ही ॥ प्रेम प्री त्य र सरी त्य समर  
 ही ॥ ४१ ॥ गद्गद कं व गली त तं न सारु ॥ म म  
 चर न न ची त प्रेम अपारु ॥ ४२ ॥ रें हें न दी व स सं  
 स अनु सुत ने ह ॥ आपार ही त ग ही त अ हं मे ह

॥ भक्ती

॥ ६५

धर ॥ ईडी अनंग भंगर सरूपया ॥ अनंग सरूप सं  
घषे मसरूपया ॥ ४३ ॥ रोमरोमरगरगतंतनसारे  
बीनुनीजप्रेमनेमसबटारे ॥ ४४ ॥ अननीनबचं  
नअहोनीसअनुरागा ॥ ममपदकंजकमल  
चीतलागा ॥ ४५ ॥ एहुनीजलक्ष्मभक्तीरसभा  
षे ॥ कहेहुसजंनजेहीरुहतेहीपाषे ॥ ४६ ॥ भक्ती  
अनीनएहीजेहीकोहुकीजे ॥ अंतसकरणभजं  
नहंमरीके ॥ ४७ ॥ रीरुहुभक्तीअनीनकरेजेहुं  
केवलमोक्षपरंमहंमदेहु ॥ ४८ ॥ केहंकुवेरसु  
नोममदासा ॥ हंमअवतारअकलअवीनासा  
४९ ॥ साषी ॥ चौदतबकदसुदशदशा ॥ जलथल  
ससपाताल ॥ बीनुनीजभक्तीअनीनममअ  
रसबआलपंपाल ॥ ५० ॥ भक्तीअनंगत्रीयातंत  
तरो ॥ क्रियाजीनुनैननचाय ॥ मुसकबंदनसो  
बोलावरो ॥ मीलहीपतसपीयुआय ॥ ५१ ॥ जेन  
नचावंनप्रेमहे ॥ मुसकबंदनडरचाह ॥ अनंग  
अंगतीजध्यांतहे ॥ ममपदपतीसदगाहा ॥ ५२ ॥  
भक्तीअनंगत्रीयेतंतवीधी ॥ प्रेमचाहाकीये  
ध्यांन ॥ सुनहोसजंनममसुधचीते ॥ करहोता  
ईअविलांत ॥ ५३ ॥ अथअंभुजंगीएसीसज्जभक्ती  
कीमंतकरोती ॥ सदासतसोहागंपरमंपदय

होती ॥ १ ॥ आलोकं प्रलोकं जीनुपदप्रियेयं ॥  
 रं श्रीवीमुषंकार्जनं श्रीयेयं ॥ २ ॥ जीवंश्रववी  
 हारं संजमं आधारं ॥ सर्वसर्वभक्तीसनेहं व  
 धारं ॥ ३ ॥ वीश्वरस्वरूपं सनेः संघविनोधं ॥ ती  
 मंतेस्वरूपं भयं भक्तीबोधं ॥ ४ ॥ अनंतं प्रका  
 रं संभक्तीभावं ॥ पंडांबुलांडं सतंत्रं सहावं ॥ ५ ॥  
 एवं भक्तीव्याप्तं जांहां जं फलाप्तं ॥ उत्तमं भजने  
 केवलपदपराप्तं ॥ ६ ॥ दोहाः ॥ भक्तीसरलश्रव  
 व्यापक ॥ हेतवीभागजीनंग ॥ जांहां जं मजेवीतां  
 हां लं म ॥ उत्तममध्यम उमंग ॥ १ ॥ मध्यमश्रल  
 पउपासना ॥ वीसीयानंदसुखजेह ॥ उत्तमभ  
 जनानंदहे ॥ कैवलमोक्षसनेह ॥ २ ॥ सोखा ॥ भ  
 क्तीसघं नघं नमेह ॥ करं नजीवं नं कु उदयं ॥ र  
 बुष्यावीनावीजजमीजेह ॥ उगहीनं प्रनेकउ  
 पायकीयं ॥ १ ॥ रतुवीनानां हीतफलेत ॥ षग  
 न्रघबुक्षपसुमं नषतनु ॥ तं मवीनुभक्तीअंतर  
 परममोक्षफलपावेनां जनु ॥ २ ॥ सकलसुख  
 दरसएन ॥ भक्तीचंत्यामणीकलपतरु ॥ करु  
 णामयेकां मधेन ॥ दीतदीननवीनसरु ॥ ३ ॥  
 सोनकरहोमतीमंद ॥ अंधक्योंनी रंधरनरा  
 जासुष्टहीभवफंद ॥ घंदजीनुसमरेश्वर ॥ ४ ॥

॥ भक्ती

दोहा ॥ अषील लोक अतु कर मनी ॥ भक्ती रसा  
यण धात ॥ अष्टसीधी नवनी ध्यतांहां ॥ जाघेर  
॥ १६ ॥ भक्ती सरात ॥ १ ॥ कोटा कल्प जपत पकरे ॥ इ  
रलव पावही बंध ॥ सो सत गुरु नीज भक्ती से  
तुरत बता बुह मंम ॥ २ ॥ रागर वेणी ॥ धंस सत य  
रु सोई भक्ती के दाता ॥ जा सु पावही अवी त्या सी  
व ध्याता ॥ १ ॥ परम क्रपाल दयाल सनेहु ॥ भवता  
रंन कारंन धरे देहु ॥ २ ॥ अवी गत्य पुर स अषंडी  
त आडु ॥ मनु तंन से धरी कर ही संवाडु ॥ ३ ॥ ओ  
वहा थतंन सर्व सरैया ॥ गती मती भीत अरु  
अलेषा ॥ ४ ॥ जाई वीमल जस्यट सु अवतारा गा  
वत धरी उरवारं मवारा ॥ ५ ॥ सेश माहेश वीरं  
ची गणेश ॥ कर ही वंदन जी नु सुर सुरेशु ॥ ६ ॥  
एसी अनाद्य आद्य गुरु पदमी ॥ लहत न जीव  
सती मरंम अधमी ॥ ७ ॥ अकल अमाप व्याप  
ष जीनकी ॥ ग्रहे जे ही सरन कर ही गती तीन  
की ॥ ८ ॥ पर उपगार करंन तीज करता ॥ धरी स  
त गुरु तंन विश्व वीचरता ॥ ९ ॥ सम ऊ अ नंत  
अंत नही जाकी ॥ बुह वीधी साय्य भाष्यर सता  
की ॥ १० ॥ बोहो ध अघा दवा द्य व वेधी ॥ पर सा  
वही पद परंम अष्टेदी ॥ ११ ॥ पक्ष पाय वी नु जाय

सहेतु ॥ सरवसकलगत्यमोक्षकंषेतु ॥ १२ ॥ इ  
 तीश्रीभक्तीज्ञाननुपदंभ्रंगसमासेः ॥ ॥  
 श्रीसाहेबकुवेरमाहाराजनोगंथमाहाम  
 णीबोधपरमपुरषप्रदीपमानदेषावंन ॥ धृत  
 पंचस्वामीनारायणवीधवंशकोग्रंथलीष्य  
 ते ॥ दोहा ॥ स्वामीनारण्यनीजनारण्य ॥ सुनीता  
 यन्ननुसार ॥ महीपतयांभोरुपगरयां ॥ एतना  
 वीचफेरफार ॥ १ ॥ महीपतयांनीजनारण्य  
 स्वामीनारण्यपतिषांन ॥ छोट्यलगाईबुंलकु  
 जुगउनकाज्ञांन ॥ २ ॥ नारीभोरुनांणातणो  
 जगदेषनवैराग ॥ ईछन्नतीभ्रंतरगत्य ॥ एपर  
 पंचीत्याग ॥ ३ ॥ उपसेडुरदुरभगी ॥ वगंनविश्व र  
 भ्रंतररीश ॥ सुडीगमाईसुडीये ॥ चरमकटाथ  
 पीईस ॥ ४ ॥ जुठेजुगपरमोधीया ॥ ज्ञानदारस  
 मसेर ॥ रैणीदेशगुजरातमे ॥ बीनुपरषभये  
 भेरा ॥ ५ ॥ देशवाडाभोरुकागीया ॥ सोहीका  
 वकीवाडा ॥ ज्ञानवेडुमालीकबीना ॥ सुनीकरी  
 उजाडा ॥ ६ ॥ वाडाकावकीकागीया ॥ रायदेश  
 गुजरात ॥ तसकरभोरुभीस्युतमेली ॥ कीन  
 कुनबडीवात ॥ ७ ॥ तेहीतसकरतेहीभीस्युत  
 सेहेजानंदकोसाथ ॥ तसकरभ्रासंनपररेह